प्रमाणपत्र

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि श्री.रंगराव बाळू भुयेकर ने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम.फिल. (हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध ` हिन्दी के विनय गीतों की परम्परा और सूरदास के विनय के पद ` मेरे निर्देशन में पूरे परिश्रम के साथ सफलता पूर्वक पूर्ण किया है। सम्पूर्ण लघु शोध-प्रबन्ध को आरंभ से अंत तक पढकर ही मैं यह प्रमाणपत्र दे रहा हूँ। श्री. रंगराव बाळू भुयेकर के प्रस्तुत शोध कार्य से मैं संतुष्ट हूँ।

29/6/1993

(प्रा.शरद कणबरकर)
शोध निर्देशक
हिन्दी विभाग
शिवाजी विश्वविद्यालय
कोल्हापुर।

दिनांक : 29/6/1993।

Head, Hindi Dept.
Shivaji University,
Kolhapur-416 004.

प्रख्यापन

मैंने हिन्दी के विनय गीतों की परम्परा और सूरदास के विनय के पद " यह लघु शोध-प्रबन्ध प्रा.शरद कणबरकरजी के निर्देशन में शिवाजी विश्वविद्यालय की एम.फिल.(हिन्दी) उपाधि के लिए पूरा किया है। मेरा यह शोधकार्य मौलिक है। यह लघु-शोध-प्रबन्ध अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए मैंने प्रस्तुत नहीं किया है।

(रंगराव बाळू भुयेकर)
मु.पो.यवलूज,ता.पन्हाळा,
जि:कोल्हापुर।

कोल्हापुर।
दिनांक : २७: 6 :१९९३।

••

अनुक्रमणिका

			पृष्ठ क्रमांक
	-	प्राक्कथन	
प्रथम अध्याय	-	सूरदास व्यक्तित्व एवं कृतित्व	१ से १५
द्वितीय अध्याय	-	संस्कृत की विनय गीतों की परम्परा	१५ " २३
तृतीय अध्याय	-	विनय का स्वरूप विवेचन	२३ " ३२
चतुर्थ अध्याय	-	सूरदास के विनय के पदों का स्वरूप	३२ " ८१
पाँचवा अध्याय	-	भक्ति-काव्य में विनय गीतों का स्थान	८१ " १०१
		उपसंहार	१०२ " ११२
		संदर्भ ग्रन्थ सूची	११३ " ११६

प्राक्कथन

बचपन में मैंने कृष्णभक्ति का एक भजन सुना था । तब मुझे मालूम हुआ था कि भजन का रचयिता सूरदास नामक कोई कवि था । मैं जब माध्यमिक स्कूल में पहुँचा तो मुझे ज्ञात हुआ कि कृष्णभक्ति संबंधी पदों की रचना करनेवाले तथा गायन करनेवाले कवियों में सूरदास जी का स्थान बहुत ही ऊँचा है । आगे महाविद्यालय में मैंने ' सूर सूर तुलसी ससी ' की बात पढी और सूरदास ही मेरे चिन्तन के विषय बने । एक और मजेकी बात है कि मैं जब एम.ए. भाग दो में पढ रहा था, तब मुझे सौभाग्य से हिन्दी अध्ययन यात्रा को जाने का मौका मिला । अध्ययन यात्रा के दौरान हम विद्यार्थी आगरा,मथुरा, बनारस और दिल्ली गये । हम जब मथुरा रेल्वे-स्टेशन पहुँचे तब रेल्वे-स्टेशन के फूटपाथ पर एक बूढी औरत बहुत ही तल्लीन होकर सूरदास जी के पदों का गायन कर रही थी । उसे सुनकर मेरा मन सूरदास जी के प्रति अत्याधिक आकर्षित हुआ । मेरी जिज्ञासा सूरदास के प्रति और बढी । जब मैंने एम.फिल उपाधि की बात सोची तो सूर को ही प्रथम चुना । हमारे विद्यार्थी प्रिय आदरणीय गुरूवर्य प्रा.शरद कणाबरकरजी से मैंने इस संबंध में चर्चा की । उन्होंने सहर्ष अनुमति के साथ अपना मौलिक और प्रौढ मार्गदर्शन कर मेरे विचारों को निश्चित दिशा दी ।

विषय का अध्ययन करते समय मेरे मन में निम्न प्रश्न थे --

१ महाकवि सूरदास का जीवन और उनके अंधत्व के बारेमें अलग-अलग विद्वानों की क्या राय है ? तथा सूरदास जी की कौनसी रचनाएँ हैं ?

२ संस्कृत के विनय गीतों का प्रभाव हिन्दी के विनय गीतों पर किस प्रकार पडा ?

३ विनय क्या है ? तथा विनय का स्वरूप कैसा होता है ?

४ सूरदास के अपने विनय के पदों का स्वरूप कैसा होगा ?

५ भक्ति-काव्य में विनय-गीतों का स्थान कैसा होगा ?

इन प्रश्नों की पूर्ति हेतु मैंने अपने लघु शोध-प्रबन्ध की निम्न प्रकार की रूपरेखा बनाई और लघु शोध-प्रबंध का क्रम पूरा किया ।

१ प्रथम अध्याय --

लघु शोध-प्रबन्ध के `प्रथम अध्याय` में मैंने सूरदास के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर संक्षेप में विचार किया है । किसी भी रचनाकार का कृतित्व उसके व्यक्तित्व का दर्पण होता है । जीवन में जो कुछ पाया उसी को वह अपने साहित्य के जरिये अभिव्यक्त करता है ।

२ द्वितीय अध्याय --

प्रबन्ध के `द्वितीय अध्याय` में मैंने ` संस्कृत के विनय गीतों की परम्परा` का विवेचन किया है । हिन्दी में विनय गीतों की परम्परा संस्कृत से चली आयी । संस्कृत भक्ति-साहित्य में विनय के अनेक अर्थ दिखाई देते हैं । जैसे --` विनय ` साधक का हृदय और परमात्मा को एकरूप करने का सहज साधन है । शरीर और मन को संयमित करना, मन को भगवान में लगाना साथ ही अपने जीवन के कर्तव्यों को पूरा करना मर्यादापूर्ण जीवन बिताना अपने से पहले अन्य दुखियों का विचार करना, लौकिक या पारलौकिक प्रलोभनों से दूर रहना भगवान के प्रति अटल विश्वास रखना तथा निष्काम भाव से अपना समग्र जीवन भगवान के प्रति समर्पित करना आदि सारे भाव` विनय ` के ही हैं ।

३ तृतीय अध्याय --

` तृतीय अध्याय` में मैंने ` विनय का स्वरूप-विवेचन ` किया है । ` विनय` याने विशेष प्रकार से झुकना । परमात्मा अथवा किसी भी शक्तिशाली के सम्मुख अपनी नम्रता या दीनता प्रकट कर उसके अनुग्रह की आकांक्षा करना ही विनय है ।

४ चतुर्थ अध्याय --

मैंने ` चतुर्थ अध्याय` में सूरदास जी के विनय के पदों का स्वरूप ` विवेचन किया है ।

सूरदास जी के विनय के पदों के अन्तर्गत छः प्रकार की प्रपत्ति अथवा शरणागति के दर्शन होते हैं । जैसे ---

१- भगवान के अनुकूल आचरण ।

२- भगवान के प्रतिकूल आचरण की निन्दा ।

३- भगवान मेरा उध्दार करेंगे इस प्रकार की दृढ धारणा ।

४- भगवान को अपना रक्षक मानना ।

५- आत्मसमर्पण की भावना ।

६- दीनता प्रकट करना ।

५ पाँचवाँ अध्याय --

` पाँचवें अध्याय` में मैंने` भक्ति-काव्य में विनय गीतों का स्थान ` इस विषय का विवेचन किया है । हिन्दी साहित्य में भक्ति-काल को ` सुवर्ण युग ` कहा जाता है । इस काल में प्रमुख रूप से भक्ति की दो धारायें प्रवाहीत हुई --

१ निर्गुण मार्गी भक्ति

२ सगुणमार्गी भक्ति

निर्गुणमार्गी भक्ति-साहित्य में कबीर की ज्ञानाश्रयी शाखा और जायसी की प्रेमाश्रयी शाखा को विशेष महत्व दिया गया है । सगुणमार्गी भक्ति - साहित्य में महात्मा तुलसीदासजी का राम-काव्य और सूरदासजी का कृष्ण-काव्य विशेष उल्लेखनीय है । भक्ति-काव्य के इन कवियों के काव्य में कम-अधिक मात्रा में ` विनय की भावना` प्रकट हुई दिखाई देती है ।

लघु-शोध-प्रबन्ध के अन्त में मैंने उपसंहार दिया है । इसमें सभी अध्यायों का संक्षिप्त रूप से सार दिया है ।

कृतज्ञता - ज्ञापन

मेरा यह लघु शोध-प्रबन्ध श्रध्देय गुरुवर प्रा.शरद कणाबरकरजी के कृपापूर्ण मार्गदर्शन का फल है । आपके सहयोग के बिना यह कार्य वैसे संपन्न होता ? गुरुविन कौन बताबे बाट ? आपने प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध के शीर्षक के चुनाव से लेकर अन्ततक अपने महत्वपूर्ण सुझाव दिए । सातत्यपूर्ण व्यस्तता के बावजूद आपने, इस लघु शोध-प्रबन्ध का प्रत्येक अध्याय देखा ,जाँचा और मुझे निरन्तर सुधार-सूचनामें एवं प्रोत्साहन दिया । प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध आपके सुयोग्य निर्देशन का परिणाम है । आपके इस अनुग्रह से उऋण होना मेरे लिए असंभव है । आपके इसी स्नेह,प्रेरणा और आशीर्वाद से मैं सदैव आपका ऋणी रहूँगा ।

मुझ पर दूसरा ऋण है आदरणीय डॉ.द्रविडजी का और डॉ.व्ही.के. मोरेजी का जिन्होंने मुझे मेरे शोध कार्य में अमूल्य योगदान दिया । आप के स्नेह एवं आशीर्वाद के बन्धन में बन्धे रहने में ही मैं धन्यता मानता हूँ ।

एम.फिल उपाधि के लिए मेरे आदरणीय गुरुवर्य प्रा.तिवले,प्रा.रजनी भागवत,प्रा.मुजावर इत्यादि का भी हार्दिक सहकार्य मिला । इन सब के प्रति मैं अभार प्रकट करता हूँ ।

मेरे परम पूज्य पिता-माता,दोनों भाई तुकाराम और माधव जिनके आशीर्वाद के बिना मेरे लिए हर कार्य असंभव है । उनकी दुवा से ही मैं यह कार्य पूरा कर सका । मैं निरन्तर उनके आशीर्वाद की छत्र छाया में रहने की कामना करता हूँ । मेरे दोस्त संजय पाटील, बाबासो पाटील ,प्रा.डी.टी.पाटील इन्होंने भी मेरी सहायता की अत: मैं इनके प्रति भी आभार प्रकट करता हूँ ।

राजाराम कॉलेज के ग्रन्थालय के लिपिक पावलस धनवडे, तथा बाळासो मगदूम ने आवश्यक ग्रन्थ सहायता देकर अनमोल सहकार्य किया । अत: इन्हें भी मैं धन्यवाद देता हूँ ।

अंत में इस शोध-प्रबन्ध को अति शीघ्र एवं सुचारू रूप से टंकलिखित रूप देने का काम श्री.बाळकृष्ण रामचंद्र सावंतजी ने बडी आत्मियता से किया । उनको भी मैं धन्यवाद देता हूँ । और भविष्य में इन सब से ऐसा ही योगदान मिलता रहेगा ऐसी कामना करते हुए समादरणीय समीक्षकों के सामने यह लघु शोध-प्रबन्ध अवलोकनार्थ प्रस्तुत करता हूँ ।

(रंगराज बाळू भुयेकर)
शोध-छात्र

कोल्हापुर ।
दिनांक : : : १९९३ ।

••